249
874 (P)
H
Microfilm

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1274/1914

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 874

891.431
Sh92 Tar

Tarana-i Azad No 8
Hindi
14 DEC. 1931
870

बन्दे मातरम

तरानये आज़ाद

न तड़पने की इजाज़त है न फ़रियाद की है।

घुट के मर जाऊँ यह मर्ज़ी मेरे सय्याद की है।

सम्पादक अथवा प्रकाशक कुं० प्रताप चंद्र आज़ाद
मौज़ा सिसैइया मगन पूर पोस्ट फ़रीदपुर
ज़िला बरेली यू० पी०

नौजवानों और विद्यार्थियों के पढ़ने व गाने योग्य अपूर्व

राष्ट्रीय पुस्तक

प्रथम बार सर्वाधिकार सुरक्षित मूल्य =)॥

(आनन्द प्रेस बरेली)

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No. 874
D. 23.12.71
GOVT. OF INDIA

ग़ज़ल न० (9)

देश हित पैदा हुये हैं देश पर मर जायंगे।
मरते २ देश को ज़िन्दा मगर कर जायंगे॥
हम को पीसेगा फ़लक चक्की में अपनी कब तलक।
ख़ाक बन कर आँख में उस की बसर कर जायंगे॥
कर रही बादे खिज़ाँ को बादे सर सर दूर क्यों।
पेशवाये फ़सले गुल में ख़ुद समर कर जायंगे॥
ख़ाक में हम को मिलाने का तमाशा देखना।
तुख़्मरेज़ी से नये पैदा शजर हो जायंगे॥
नौ नौ आँसू जो रुलाते हैं हमें उन के लिये।
अश्क के सैलाब से बरपा हश्र कर जायंगे॥
गर्दिशे गरदाब में डूबे तो कुछ परवाह नहीं।
बहरे हस्ती में नई पैदा लहर कर जायंगे॥
क्या कुचलते हैं समझकर वह हमें बर्गे हिना।
अपने ख़ूँ से हाथ उनके तर बतर कर जायंगे॥
नक़्शे पा है क्या मिटाता तू हमें पीरे फ़लक।
[illegible]

ग़ज़ल नं० (२)

झुक गये पर्दे हया के दुनियाँ शर्माने लगी ।
हट के निकलो बेईमानों तुम में बू आने लगी ॥
हम फ़िदायाने वतन हैं देख ले आज़ाद हैं ।
शोच कर बोले कि हाँ कुछ २ ख़बर आने लगी ॥
तू मज़हब का तो शैया था ख़ूब मुँह काला हुआ ।
हर गली कूँचे में तुम पर जूतियाँ पड़ने लगीं ॥

ग़ज़ल नं० (३)

ले० बिस्मल इलाहाबादी

शौक़े दिल कहता है घबराने से कुछ हासिल नहीं ।
मनाज़िले उलफ़त कोई दो चार सौ मनाज़िल नहीं ॥
फेर लुँगा में छुरी गरदन पर अपने हाथ से ।
मरने वाले के लिये मरना कोई मुश्किल नहीं ॥
डूबने वाले से कहती है यह मौजे बहरे ग़म ।
जान देकर देख तुझ से दूर अब साहिल नहीं ॥
रोकती है इस इरादे से मुझे मेरी उमाद

मैं समझता था कि मर जाना कोई मुश्किल नहीं ॥
दिल से निकले लब तक आये लब से नीचे अर्श तक।
दिल ही दिल में जो रहे घुट कर वह आहे दिल नहीं ॥
जादये हुब्बे वतन में पेचो खम का खौफ़ क्या ।
चलने वाला चाहिये यह राह कुछ मुश्किल नहीं ॥
आश तुम ने तोड़ दी अपने मरीज़े इश्क़ की ।
उसके मुँह पर क्यूँ कहा जीने के यह क़ाबिल नहीं ॥
हर नफ़स कहता है थक थक कर यह मुझसे हर नफ़स
रहरवे दम कर दह्र मनज़िल की कहीं मनज़िल नहीं ॥
लोग कहते हैं कि वह क़ातिल बड़ा बे दर्द है ।
उस को भी बिस्मल न कर दूँ तो मैं बिस्मल नहीं ॥

नौजवानों से अपील

ले० प्रताप चंद्र आज़ाद सिसैइया मगनपूरी

गज़ल न०(७)

नव युवक सपूतो माता के ध्यान इधर भी धरना होगा।
भारत में जन्मे हो इस कारण माता का फ़र्ज़ अदा करना होगा

बाल बनाना तेल डालना फ़ैशन का अब नहीं ज़माना है।
शेर मर्द मर्दाने तुम तो हो यह एक भेश ज़नाना है ॥
नेकटाई कालर चश्मा लगाने में है कुछ शान नहीं।
देश कार्य करने और खद्दर में कुछ अपमान नहीं ॥
जिस भारत में जन्मे हो जिस माता ने दूध पिलाया है।
धिक्कार तुम्हारे जीवन पर ऐसा यह तुमको क्या भाया है ॥
साटी फ़िकट बी ए एम ए का लेकर शहद में चाटोगे।
लाखों भाई बेकार तुम्हारे तुम कौन से पद को पावोगे ॥
तुम पुत्र जवानों के होते माता पर अत्याचार हज़ारों हों।
लानत है इस जीवन पर लानत धिक्कार तुम्हारे कामों को ॥
जब युवक भगत को फांसी हो बच्चे बुड्ढे तक रोते हैं।
यह कैसे नये जवान हैं भारत के गहरी नींद में सोते हैं ॥
भारत माता तुम पर रोती है आँसू चार बहाती है।
जिस गोद में तुम जन्मे हो वह माता हा हा खाती है ॥
मातायें बहनें जेल में हों दिन रात हों अत्याचार भी उनपर।
तुम गहरी नींद में सोते पड़े हो शाबाश जवानों तुम पर ॥
अब आज़ाद उठो तुम भी सोने का है वक़्त गया।

चार तरफ़ देखो भारत में कैसा हा हा कार मचा ॥

ग़ज़ल नं० (५)

ले० किशनलाल साक़िब

हाँ हिन्दु मुसलिन से प्रेम बढ़ायंगे ।
हाँ काबे वाले भी काशी में आयंगे ॥
हाँ हिन्दू को मुसलिम से प्यार है ।
और मुसलिम भी हिन्दू का यार है ॥
शान भारत की दोनों बचायंगे ॥
हाँ हिन्दू मुसलिम का माल रखायेगा ।
और मुसलिम हिन्दु की लाज बचायेगा ॥
दोनों मिल २ के ख़ुशयाँ मनायंगे ॥
हिन्दु मुसलिम के घर का चिराग़ है
दोनों फूल हैं भारत बाग़ है ॥
जो हैं काँटे उन्हे अब जलायंगे ॥
कमली वाले को हिन्दू से प्यार है ।
मुरली वाला भी मुसलिम का यार है ॥
दोनों भारत की गौऊयें चरायंगे ॥

एक पुर फ़न है दूसरा कमाल है।
भारत माता के दोनों ही लाल हैं।
दुशमन दोनों को क्या आज़मायेंगे॥

गज़ल नं० (६)

ख़ुदाया कैसी मुसीबतों में यह हिन्द वाले पड़े हुये हैं।
क़दम २ पर हमारी ख़ातिर सितम के जाले पड़े हुये हैं॥
हमारे मेहरबां जो आरे बनकर तो ज़ुल्म करने लगे हमें पर।
ग़ज़ब है अपने मकां के बाहर मकान वाले पड़े हुये हैं॥
सरों पे दुशमन खड़े हुये हैं गलों में ख़ंजर अड़े हुये हैं।
दिलों में नश्तर चुभे हुये हैं जिगर में सदमे पड़े हुये हैं॥
हज़ारों बच्चों से बाप बिछड़े वह लेंगे क़िस्मत से होके एकड़े।
सुहागनों के सुहाग उजड़े घरों में ताले पड़े हुये हैं॥
हवा ज़माने की पलटी मैंघर तो ज़ुल्म होने लगे सरासर।
सुनायें फ़रियाद किस को जाकर दिलों में छाले पड़े हुये हैं॥

ग़ज़ल न० ७

ले० कविरत्न राधेश्याम बरेली

उठी लेखनी आज फिर लेकर यह अभिमान।
मोहन मोहनदास का करता है गुन गान॥

इसी देश की मेटने आये दोनों त्रास।
वह केवल मोहन रहे यह हैं मोहन दास॥

विख्यात वह ब्रज बिहारी थे - तो यह गुजरात बिहारी हैं।
वह चक्र सुदर्शन धारी थे - तो यह भी चरखा धारी हैं॥
वह जन्मे कारागृह में थे यह बासी कारागृह के हैं।
वह सुत्र महाभारत के थे - यह नेता सत्याग्रह के हैं॥
वे दूध गाये का पीते थे - इन को बकरी का भाया है।
गोबर धन उठाया था - भारत इधर जगाया है॥
वह बंशी मधुर बजाते थे - यह तकुली खूब चलाते हैं।
वह काली कमली वाले थे - यह खद्दर में दिखलाते हैं॥
वह मथुरा से द्वारका गये - यह अफ़रीक़ा रह आये हैं।
वह माखन चोर कहलाते थे - यह नमक चोर कहलाये हैं॥
उनका भी भक्त ज़माना था - इनका भी भक्त ज़माना है।

उन मोहन का बरसाना था- इन मोहन से धरासाना है।
तब भी यह भारत निर्भय था - अब भी भारत निर्भय है॥
अब सब मिल कर बोलो तुम - श्री मोहन करम-चंद की जै

ग़ज़ल नं० (८)

पण्डित मोती लाल नेहरू की यादगार

काम करने वाले उस से काम करना सीख जायें।
पाँव मैदाने सियासत में वह धरना सीख जायें॥
यूँ निडर होकर किसी से भी न डरना सीख जायें।
देश पर मरना किसे कहते हैं मरना सीख जायें॥
जानते हैं अच्छे, २ काम मोती लाल का।
रहती दुनिया तक रहेगा नाम मोती लाल का॥
बांकपन के साथ थी हर आन मोती लाल की।
थी समद्र पार भी क्या शान मोती लाल का॥
दौलते दुनिया रही मेहमान मोती लाल की।
देश सेवा के लिये थी जान मोती लाल की॥
यूँ तो दुनिया के समद्र में कमी होती नहीं।
लाखों मोती हैं मगर इस आन का मोती नहीं॥

ग़ज़ल नं० (९)

ले० प्रताप चंद्र आज़ाद सिसैइया भगन पुरी बरेली

करेगा ज़ुल्मो सितम कब तक मुझे तड़पायगा।
आंसुये खूँ के रुलाकर ज़ालिम नहीं सुख पायगा॥
एक दिन पूछेंगे हम भी तुझ से फ़िरंगी ज़ालिमाँ।
हिन्द से लन्दन को जब के तू सफ़र कर जायगा॥
मुँह तो काला होगया अब जूतियाँ बाक़ी रहीं।
भागजा जलदी से वरना नाम तक मिट जायेगा॥
होगया आज़ाद भारत हिन्द वालो देख लो।
दे दो धक्के फ़िरंगी हिन्द में न रहने पायेगा॥
भगादो मार डन्डे बन्दरों को कलन्दर हिन्द के।
अब न कोई भी कहीं आज़ाद को तड़पायेगा॥

ग़ज़ल नं० (१०)

क्या हुआ गर मर गये अपने वतन के वास्ते।
बुलबलें कुर्बान होती हैं चमन के वास्ते॥
तर्स आता है तुम्हारे हाल पर ऐ हिन्दयो।

ग़ैर के मुहताज हो अपने कफ़न के वास्ते॥

देखते हैं आज जिसको शाद है आज़ाद है।

क्या तुम्ही पैदा हुये रंजो मेहन के वास्ते॥

फ़र्द से अब बिलबिला का ज़माना होगया।

फ़िक्र करनी चाहिये मर्ज़े कुहन के वास्ते॥

हिन्दुओं को चाहिये कि क़स्द काबे का करें।

और फिर मुस्लिम बढ़ें गंगो जमन के वास्ते॥

ग़ज़ल नं० (११)

आज़ादी का दीवाना है मस्ताना भगतसिंह।

बम केस में पकड़ा गया दीवाना भगतसिंह

भारत की एक शान है दीवाना भगतसिंह।

हम बाग़ी का अरमान है दीवाना भगत सिंह॥

होती थी मीटिंग असेम्बली में जिसदम फेंका बम।

इस केस में पकड़ा गया दीवाना भगत सिंह॥

देता था लाल पर्चा वह लाहौर के थानों में।

हो जाओ होशियार यह कहता था भगत सिंह॥

ग़ज़ल नं० (१२)

नतीजा बद से बद हमको मिला है
तुम्हारी हर जगह इमदाद करके ।
किया आबाद अपना देश तूने
हमारे मुल्क को बरबाद करके ॥

रहो तुम शौक़ से हिन्दुस्ताँ में
मगर हिन्दुस्ताँ को आज़ाद करके।
करेंगे मुल्क को आज़ाद अपने
तुम्हारी जेल को आबाद करके॥

निहत्तों पर तिरा गोली चलाना
रहेगा यह तुझे बरबाद करके।
ज़मीने हिन्द छोड़ी इन को देकर
मुसीबत में फंसे आबाद करके॥

समझले खूब ऐ ज़ालिम समझले
मिटेंगे अब तुझे बरबाद करके।
हमें मंज़ूर है ज़िन्दाँ में चलना
अगर रक्खो हमें दामाद करके ॥

स्कूलों और खासकर कालिज के

हमारे भाई अवश्य ध्यान दें।

ग़ज़ल नं० (१४)

ले० म० चंद्र कवि।

हिन्दोस्ताँ की कमाई फ़ी कस ग्यारह पाई है।
खर्च होता है जितना उसकी फ़ेहरिस्त बनाई है॥
दो की टोपी क़मीज सवा की नकटाई छै आने की
पाँच का चश्मा पाँच आने का कालर टाई लगाने की
नहीं पाँच से कम लगते वेसकोट कोट बनाने को
कम से कम पतलून चार की गैलिस बारह आने की
तीसरे दिन चार आने लगने लगी धुलाई है॥
साढ़े सात से कम नहीं लगते वेस्टेन्ड वाच मंगाने में
एक रुपये से कम नहीं लगता फ़ैन्सी बेंत उठाने में
डासन का फुलबूट सात का है मशहूर ज़माने में
बुरुष और पालिश की शीशी दोनों मिलें नौ आने में
आदेश की जुराब क़ीमती छै आने बतलाई है॥

तीस की सेकेंड हैंड साईकिल यह भी आजकल का फैशन

एक मील भी नहीं चल सकते पैदल यह मिस्टर इण्डियन
सवा रुपये का घर में सलीपर रखना पड़ता है मजबूरन
ग़लती हो तो कीजे माफ़ मैं बतलाता हूँ तख़मीनन
एक आना रोज़ाना इनसे लेता बुद्धू नाई है ॥
कंघा साबन तेल सेफ़्टी पिन तुम को गिनवाऊँ क्या
दस आने से कमती क़ीमती उन की और लगाऊँ क्या
सिग्रेट का किस क़दर ख़र्च है यह तुमको समझाऊँ क्या
चंद्र कहे यह ख़र्च थर्ड का फ़र्स्ट क्लास बताऊँ क्या
इस फ़ज़ूल ख़र्ची ने भारत में दर दर भीख मंगाई है ॥

ग़ज़ल नं०(२५)

बाँध ले बिस्तर फ़िरंगया राज अब जाने को है।
ज़ुल्म काफ़ी कर चुके पबलिक बिगड़ जाने को है॥
गोलियाँ तो खा चुके अब तोप भी हम देख लें ।
मर मिटेंगे देश पर फिर इन्क़लाब आने को है॥
वीर जवाहर जी हैं जेल में क़ौम के वह ना ख़ुदा।
जेल खाना तोड़ देंगे यह हवा चलने को है ॥

कह रहे हैं बाबा गांधी मान लो शर्तें तमाम।
वरना फिर नक़्शा हुकूमत का पलट जाने को है॥
आगये हैं अब पिटेल भी कारज़ोर हिन्द में।
देखना राज शाही बे नक़ाब होने को है॥
लिखदई गांधी ने चिट्ठी आखिरी इरवन के नाम।
अब संभल जा तू फिरंगी वरना निशाँ मिटने को है॥
मालवी ने वार अपना कर दिया इंगलैन्ड पर।
देखना अब मान्चेस्टर भी उजड़ जाने को है॥

मिलने का पता

कुं० प्रताप चंद्र आज़ाद मौज़ा सिसैइया मान पुर
पोस्ट फ़रीद पुर ज़िला बरेली

व

चौधरी पूरनसिंह मौज़ा बसन्त नगर डाकखाना रिछा
ज़िला बरेली